ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 298-304**
I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-I, Issues-35, YEAR-Jan-Mar. 2025

भारतीय कृषिगत निर्यातों में मसालों के निर्यात की भूमिका– एक आलोचनात्मक विश्लेषण

अमित कुमार सिंह, 2. डॉ0 ऋषि विवेक धर
असि0 प्रोफेसर– अर्थशास्त्र, शहीद मंगल पाण्डेय राजकीय महिला महाविद्यालय, 2. असि0 प्रोफेसर– अर्थशास्त्र, अमर नाथ मिश्र पीजी कॉलेज, दुबेछपरा, (जननायक चन्द्रशेखर विश्वविद्यालय), बलिया (उ0प्र0),भारत

Received-25.02.2025 **Revised-02.03.2025** **Accepted-09.03.2025** **E-mail:aksmau05@gmail.com**

सारांशः ***भारत में कृषि के निर्यात न केवल संख्यात्मक दृष्टिकोण से महतवपूर्ण हैं, बल्कि यह अर्थव्यवस्था के संरचनात्मक परिवर्तन, क्षेत्रीय संतुलन और भारत के बड़ी जनसंख्या के जीवन स्तर की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। भारतीय कृषि में निर्यात की भूमिका महत्वपूर्ण है और भारत विश्व का सबसे बड़ा मसाला उत्पादक, उपभोक्ता और निर्यातक देश है। भारतीय मसाला बोर्ड के अनुसार भारत 75 से अधिक प्रकार के मसालों का उत्पादन करता है और 180 से अधिक देशों को निर्यात करता है। वर्ष 2023–24 में भारत ने लगभग 1415.21 हज़ार टन मसालों का निर्यात किया, जिसका मूल्य लगभग 4484.17 मिलियन अमेरिकी डॉलर रहा। वर्ष 2002 के बाद से भारत का मसला निर्यात निरंतर वृद्धि की तरफ रहा है। वैश्विक मांग और भारतीय मसालों की गुणवत्ता के कारण निर्यात मात्र और मूल्य दोनों में वृद्धि पायी गयी है। लाल मिर्च जीरा हल्दी कालीमिर्च और इलाइची भारतीय मसाला निर्यात के प्रमुख अंग रहे हैं, यदपि मानकीकरण और मूल्य वृद्धि जैसे क्षेत्रों में कुछ चुनौतिया बनी हुई है साथ ही, नए बाजारों और रणनीतियों के उपयोग से भविष्य के अवसर स्पष्ट हैं।***

कुंजीभूत शब्द– कृषिगत निर्यात ,मसाले के निर्यात की संरचना, मसाले के निर्यात की दिशा, APEDA, भारतीय मसाला बोर्ड, "मसालों की भूमि ।

प्रस्तावना– भारत प्राचीन काल से ही "मसालों की भूमि" के रूप में विश्व भर में प्रसिद्ध रहा है। काली मिर्च, इलायची, दालचीनी, हल्दी, लौंग और जीरा जैसे मसालों ने ऐतिहासिक रूप से भारत को वैश्विक व्यापार का केंद्र बनाया। रोमन साम्राज्य से लेकर मध्यकालीन अरब व्यापारियों और यूरोपीय औपनिवेशिक शक्तियों तक, भारतीय मसालों की मांग ने वैश्विक समुद्री व्यापार को दिशा दी। वर्तमान समय में भी मसाला निर्यात भारतीय कृषि निर्यात का एक महत्वपूर्ण घटक है और यह विदेशी मुद्रा अर्जन, ग्रामीण रोजगार तथा कृषि विविधीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

भारत विश्व का सबसे बड़ा मसाला उत्पादक, उपभोक्ता और निर्यातक देश है। स्पाइसेज़ बोर्ड ऑफ इंडिया के अनुसार भारत 75 से अधिक प्रकार के मसालों का उत्पादन करता है और 180 से अधिक देशों को निर्यात करता है। वर्ष 2022–23 में भारत ने लगभग 46 लाख टन मसालों का निर्यात किया, जिसका मूल्य लगभग 3.73 बिलियन अमेरिकी डॉलर रहा। प्रमुख निर्यातित मसालों में लाल मिर्च, जीरा, हल्दी, धनिया, काली मिर्च, इलायची और मसाला तेल एवं ओलियोरेजिन शामिल हैं। हाल के वर्षों में जीरा और लाल मिर्च के निर्यात में उल्लेखनीय वृद्धि हुई, विशेषकर अमेरिका, चीन, बांग्लादेश, संयुक्त अरब अमीरात और दक्षिण–पूर्व एशियाई देशों में।

मसाला निर्यात भारत के कृषि निर्यात में महत्वपूर्ण विदेशी मुद्रा अर्जन का स्रोत है। कृषि एवं प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (APEDA) के अनुसार मसाले, भारत के कुल कृषि निर्यात में लगभग 8–10% योगदान करते हैं। मूल्य संवर्धित उत्पाद जैसे मसाला पाउडर, मिश्रित मसाले, मसाला तेल एवं ओलियोरेजिन के निर्यात से अधिक विदेशी मुद्रा प्राप्त होती है। यह "मूल्य वर्धन" भारतीय निर्यात संरचना को कच्चे उत्पादों से उच्च मूल्य वाले प्रसंस्कृत उत्पादों की ओर ले जा रहा है। मसाला उत्पादन मुख्यतः छोटे और सीमांत किसानों द्वारा किया जाता है। केरल, कर्नाटक, तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, राजस्थान और गुजरात प्रमुख मसाला उत्पादक राज्य हैं। मसाला खेती श्रम–प्रधान होने के कारण ग्रामीण क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर रोजगार प्रदान करती है। इसके अतिरिक्त, मसाला प्रसंस्करण, पैकेजिंग, भंडारण और निर्यात श्रृंखला में भी लाखों लोगों को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रोजगार मिलता है। महिला श्रमिकों की भागीदारी विशेष रूप से मसाला प्रसंस्करण उद्योग में अधिक है, जिससे महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा मिलता है।

भारत में कृषि विविधीकरण की दिशा में मसाला उत्पादन महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। पारंपरिक खाद्यान्न फसलों की तुलना में मसाले उच्च मूल्य प्रदान करते हैं। उदाहरण स्वरूप, जीरा और इलायची जैसी फसलें किसानों को अधिक लाभांश देती है। मसाला खेती जलवायु के अनुरूप विभिन्न कृषि–जलवायु क्षेत्रों में की जा सकती है, जिससे यह जोखिम प्रबंधन का एक प्रभावी साधन बनती है। निर्यातोन्मुख फसलों के रूप में मसाले किसानों की आय दोगुनी करने की रणनीति में भी सहायक सिद्ध हुए हैं।

वैश्विक मसाला बाजार में भारत के साथ वियतनाम (काली मिर्च), इंडोनेशिया (लौंग), चीन (लहसुन) और ग्वाटेमाला (इलायची) जैसे देश प्रतिस्पर्धा करते हैं। फिर भी, विविधता, गुणवत्ता और जैविक मसालों के उत्पादन में भारत की स्थिति मजबूत है। भारत की विशिष्ट भौगोलिक पहचान (GI Tag) प्राप्त मसाले जैसे मालाबार काली मिर्च, अलेप्पी हल्दी और बायडगी मिर्च अंतरराष्ट्रीय बाजार में प्रीमियम मूल्य प्राप्त करते हैं। यह ब्रांड वैल्यू भारतीय मसाला निर्यात को प्रतिस्पर्धात्मक लाभ प्रदान करती है। हालाँकि मसाला निर्यात में वृद्धि हुई है, लेकिन गुणवत्ता मानकों, अवशेष स्तर, और अंतरराष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा नियमों का पालन एक प्रमुख चुनौती है। यूरोपीय संघ और अमेरिका जैसे बाजारों में सख्त SPS (Sanitary and Phytosanitary) मानक लागू हैं। कीटनाशक अवशेष, अफ्लाटॉक्सिन और मिलावट जैसे मुद्दों के कारण कुछ निर्यात खेपों को अस्वीकृत किया गया है। इसके समाधान के लिए स्पाइसेज़ बोर्ड गुणवत्ता परीक्षण प्रयोगशालाओं और ट्रेसबिलिटी सिस्टम को मजबूत कर रहा है ।

यू0एस0ए0 भारत का सबसे प्रमुख मसाला आयातक देश है। इसके अतिरिक्त चीन, वियतनाम, यू0ए0ई0, मलेशिया, सऊदी अरब, यू0के0, जर्मनी , सिंगापुर, श्रीलंका इत्यादि भारतीय मसालें के प्रमुख आयातक देश हैं। मसालें के निर्यातों को प्रोत्साहित करने के लिए भारत सरकार द्वारा भारतीय मसाला बोर्ड का गठन किया गया है। जो न केवल मसालें की गुणवत्ता पर नजर रखता है तथा प्रमाणपत्र जारी करता है, वरन यह नीतिगत मुद्दों पर केन्द्र सरकार को जानकारी भी उपलब्ध कराता है। सरकार ने मसाला निर्यात को बढ़ावा देने के लिए कई नीतिगत पहलें की हैं। कृषि निर्यात नीति 2018 (Agriculture Export Policy, 2018) का उद्देश्य कृषि उत्पादों के निर्यात को दोगुना करना है, जिसमें मसाले एक प्रमुख घटक हैं। प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना, मिशन फॉर इंटीग्रेटेड डेवलपमेंट ऑफ हॉर्टिकल्चर (MIDH) और उत्पादन–आधारित प्रोत्साहन (PLI) योजनाएँ भी प्रसंस्करण एवं निर्यात को बढ़ावा देती हैं।

पी० शेखर और टी० मदनराज ने 1991 से 2017 के बीच भारत के मसालों के निर्यात की प्रवृत्ति और उनके निर्धारण पर कार्य किया, जबकि एन० विलासिनी और एस० गोपाल सामी ने उन कारकों का अध्ययन किया जो भारत में मसालों के निर्यात को प्रभावित करते हैं। जबकि पार्थ विश्वास (2024) ने अपने अध्ययन में यह बताया कि भारतीय मसालों के उत्पादकता और निर्यात को कैसे बढ़ाया जा सकता है।

अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-I, Issues-35, YEAR-Jan-Mar. 2025

भारतीय मसाला बोर्ड की स्थापना और महत्व– भारतीय मसाला बोर्ड की स्थापना वर्ष 1987 में Spices Board Act, 1986 के अंतर्गत की गई थी। इसका मुख्यालय कोच्चि (केरल) में स्थित है।

यह बोर्ड पूर्व के दो संगठनोंकृ इलायची बोर्ड और मसाला निर्यात संवर्धन काउन्सिल को मिलाकर बनाया गया था, ताकि मसालों के उत्पादन, गुणवत्ता नियंत्रण और निर्यात संवर्धन को एक ही संस्था के अंतर्गत समन्वित रूप से संचालित किया जा सके। यह संस्था भारत सरकार के उद्योगऔर वाणिज्य मन्त्रालय के अधीन कार्य करती है।

यदि भारतीय मसाला बोर्ड के प्रमुख कार्यों का विश्लेषण करें तो इसे निम्नलिखित भागों में दर्शाया जा सकता है:

1. मसालों के निर्यात को बढ़ावा देना, 2. अंतरराष्ट्रीय बाजार में भारतीय मसालों की ब्रांडिंग और प्रचार–प्रसार, 3. गुणवत्ता नियंत्रण और प्रमाणन जिसमे मसालों की शुद्धता, सुरक्षा एवं अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप परीक्षण करना शामिल है, 4. उत्पादन एवं अनुसंधान को प्रोत्साहन देना तथा नई किस्मों का विकास, किसानों को प्रशिक्षण एवं तकनीकी सहायता। 5. किसानों का पंजीकरण एवं सहायता, इलायची एवं अन्य मसाला उत्पादकों का पंजीकरण और सब्सिडी योजनाएँ बनाना। 6. बाजार अनुसंधान और डाटा संकलन तथा निर्यात आँकड़ों का प्रकाशन और वैश्विक मांग का विश्लेषण। 7. जैविक मसालों का प्रोत्साहन, ऑर्गेनिक प्रमाणन एवं ट्रेसबिलिटी प्रणाली का विकास।

भारतीय मसाला बोर्ड का महत्व– भारतीय मसाला बोर्ड कई कारणों से दश के लिए महत्वपूर्ण माना जाता है, जो निम्नलिखित है:

(क) भारत विश्व का सबसे बड़ा मसाला उत्पादक और निर्यातक देश है। मसाला निर्यात से देश को प्रतिवर्ष अरबों डॉलर की विदेशी मुद्रा प्राप्त होती है।

(ख) केरल, कर्नाटक, तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, राजस्थान आदि राज्यों के लाखों किसान मसाला उत्पादन से जुड़े हैं। बोर्ड की योजनाएँ उनकी आय बढ़ाने में सहायक हैं।

(ग) "ब्रांड इंडिया" को सशक्त बनाना, भारतीय मसाले (जैसे काली मिर्च, हल्दी, इलायची, जीरा, लाल मिर्च) विश्व बाजार में गुणवत्ता और स्वाद के लिए प्रसिद्ध हैं। बोर्ड इनकी वैश्विक पहचान को मजबूत करता है।

(घ) गुणवत्ता एवं खाद्य सुरक्षा, अंतरराष्ट्रीय मानकों (EU, USA आदि) के अनुरूप गुणवत्ता सुनिश्चित करना, जिससे निर्यात में अस्वीकृति कम हो।

(ङ) मसाला प्रसंस्करण, पैकेजिंग और निर्यात से ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसर बढ़ते हैं।

भारत द्वारा मसाले के निर्यात की संरचनाः एक विश्लेषण– मसालों की संरचना का तात्पर्य है कि भारत द्वारा किन किन मुख्य मसालों का अन्य देशों को निर्यात किया जाता है। अन्तरराष्ट्रीय बाज़ार में भारतीय मसाले प्राचीन काल से ही ना केवल महत्वपूर्ण रहे हैं, बल्कि इनकी मांग लगातार बनी रही है। यदि भारत के कृषिगत निर्यात का विश्लेषण करें तो सारिणी–1 के आंकड़ों के अनुसार 2002–03 में भारत द्वारा कुल 6708 US मिलियन डॉलर करने पर का कृषिगत निर्यात किया गया था, जिसमें मसालों का योगदान 342 US मिलियन डॉलर था। यह कुल कृषिगत निर्यात का 5.09% था। 2012–13 में मसालों का निर्यात बढ़कर 2821.80 US मिलियन डॉलर हो गया उसी अवधि में कुल कृषिगत निर्यात 40907.50 US मिलियन डॉलर हो गया। उक्त अवधि में कुल निर्यात में 6 गुना से ज्यादा वृद्धि हुई, जबकि मसाले के निर्यात में 8 गुना से ज्यादा की वृद्धि हुई। मसाले निर्यात की यह प्रवृत्ति भारतीय मसाले के वैश्विक मांग को स्पष्ट करती है।

सारणी– 1

भारत द्वारा मसाले के निर्यात की संरचनाः US मिलियन डॉलर में

वर्ष	कुल कृषिगत निर्यात का मिलियन US $ में	मसाले का निर्यात मिलियन US$ में
2002-03	6,708.00	342
2003-04	7,538.30	336.3
2004-05	8,471.20	418.9
2005-06	10,212.30	477.9
2006-07	12,674.90	697.4
2007-08	18,441.60	1,072.30
2008-09	17,562.90	1,380.30
2009-10	17,742.80	1,298.50
2010-11	24,203.70	1,765.10
2011-12	37,452.10	2,757.10
2012-13	40,907.50	2,821.80
2013-14	42,955.40	2,503.50
2014-15	38,722.10	2,428.10
2015-16	32,474.40	2,540.50
2016-17	33,281.50	2,848.60
2017-18	38,449.70	3,116.40

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-I, Issues-35, YEAR-Jan-Mar. 2025

2018-19	38,737.30	3,322.00
2019-20	41115.35	3033.28
2020-21	41226.76	4178.8
2021-22	50213.28	4068.47
2022-23	53137.21	3952.6
2023-24	48770.16	4464.17

स्रोत– CMIE Outlok.com 2023-24 (in US Million $), Spice Board Of India, DGCI-S, Kolkata, Ministry of Commerce, Government of India.

चित्र संख्या–1

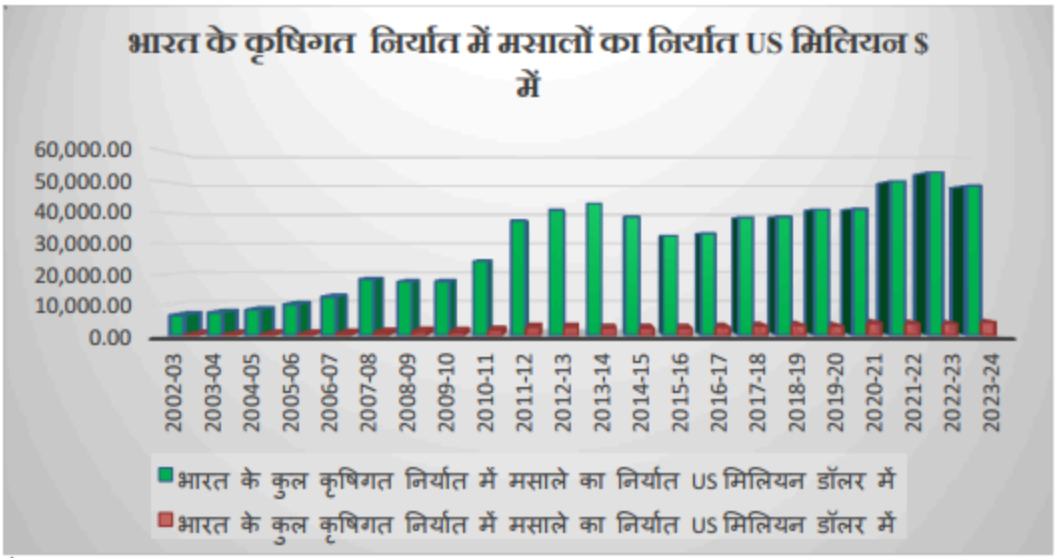

स्रोत : सारणी– 1 के आधार पर निर्मित–भारत से मसालों का निर्यात US मिलियन डॉलर में

सारणी संख्या 1 के अनुसार 2003–04 में भारत का मसाला निर्यात सबसे कम 336.3 मिलियन डॉलर हो गया। मसालों की यह निर्यात मात्र बढ़ती हुई 2023–24 में सर्वधिक 4464.17 US मिलियन डॉलर हो यह 2002–03 की अपेक्षा 13 गुना से ज्यादा थी। यह भारत के कृषिगत वस्तुओं के निर्यातों में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं।

सारणी संख्या–2

भारत द्वारा मसाले के निर्यात की संरचना का 2002–2024 के मध्य परिवर्तन

वर्ष	मसाले का औसत निर्यात (US मिलियनडॉलर)
2002-03 से 2012-13	1215.23
2013-14 से 2023-24	3314.2

स्रोतःसारणी संख्या– 1 पर आधारित

चित्र संख्या–2

स्रोत : सारणी संख्या– 2

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-I, Issues-35, YEAR-Jan-Mar. 2025

सारणी संख्या 2 में 2002–03 से 2012–13 और 2013–14 से 2023–24 के बीच दो समयावधि में मसलों के निर्यात का अध्ययन किया गया है, जहाँ 2002–03 से 2012–13 के समयावधि में मसालों का औसत निर्यात 1215.23 US मिलियन डॉलर का था, जबकि विश्लेषण के दुसरे समयावधि 2013–14 से 2023–24 के बीच भारत से मसालों का निर्यात 3314.2 US मिलियन डॉलर था। यदि दोनों समयावधि में तुलना करें तो इस अवधि में भारतीय मसालों के निर्यात में 2.7 गुने से ज्यादा की वृद्धि हुई है।

सारणी संख्या –3

भारत के कुल कृषिगत निर्यात में मसाले का निर्यात अंश (% में)

वर्ष	कुल कृषिगत निर्यात में मसाले का निर्यात अंश % में
2002-03	5.09
2003-04	4.46
2004-05	4.94
2005-06	4.67
2006-07	5.5
2007-08	5.81
2008-09	8.86
2009-10	7.31
2010-11	7.29
2011-12	7.35
2012-13	6.89
2013-14	5.82
2014-15	6.27
2015-16	7.82
2016-17	8.55
2017-18	8.1
2018-19	8.57
2019-20	6.93
2020-21	7.56
2021-22	6.62
2022-23	5.71
2023-24	8.57

स्रोत : सारणी संख्या– 1 के आधार पर निर्मित

सारणी संख्या–03 में भारत द्वारा होने वाले कुल कृषिगत निर्यातों में मसाले के निर्यात को प्रतिशत रूप में प्रदर्शित करता है। इस सारणी के अनुसार वर्ष 2002–03 में भारत के कुल कृषिगत निर्यातों में मसालों का योगदान 5.09 प्रतिशत था, जो 2003–04 में निम्नतम 4.46 प्रतिशत हो गया।

कुल निर्यात में मसालों का अधिकतम योगदान 2008–09 में 8.86 प्रतिशत था, जो इस अध्ययन की समग्र समयावधि में सबसे अधिक है। 2013–14 में यह कुल निर्यात के 5.82 प्रतिशत था और 2023–24 में 8.57 प्रतिशत था।

यदि इस समयावधि में सारणी संख्या–3 को देखे, तो भारत के कुल कृषिगत निर्यात में मसालों का निर्यात का अनुपात 4.46–8.86 प्रतिशत के बीच रहता है, जो भारत के कृषिगत में मसलों की एक महत्वपूर्ण भूमिका को दिखता है।

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-I, Issues-35, YEAR-Jan-Mar. 2025

चित्र संख्या–3

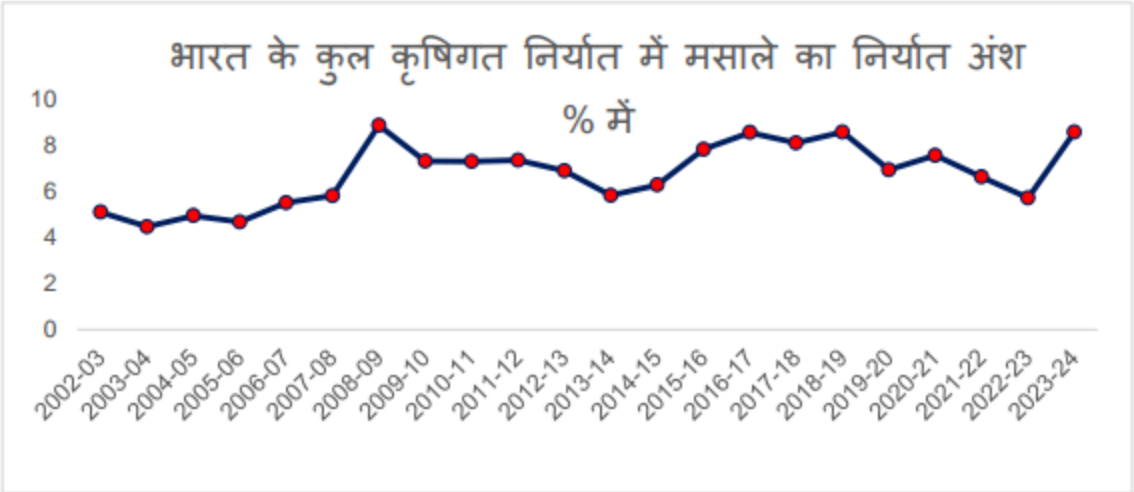

स्रोतः सारणी संख्या– 3 के आधार पर निर्मित

सारणी संख्या–04

भारत द्वारा मसाले के निर्यात की संरचना का औसत (प्रतिशत रूप में)

वर्ष	मसाले का औसत निर्यात (US मिलियन डॉलर)
2002-03 से 2012-13	6.19
2013-14 से 2023-24	7.32

स्रोतः सारणी संख्या– 02 पर आधारित

यदि दशकीय आधार में मसालों के निर्यातों का विश्लेषण करें, तो वर्ष 2002–03 से 2012–13 के बीच भारत द्वारा मसालों का औसत निर्यात 6.19 US मिलियन डॉलर था, जो अगले समयावधि 2013–14 से 2023–24 में बढ़ के 7.32 US मिलियन डॉलर हो गया।

चित्र संख्या–4

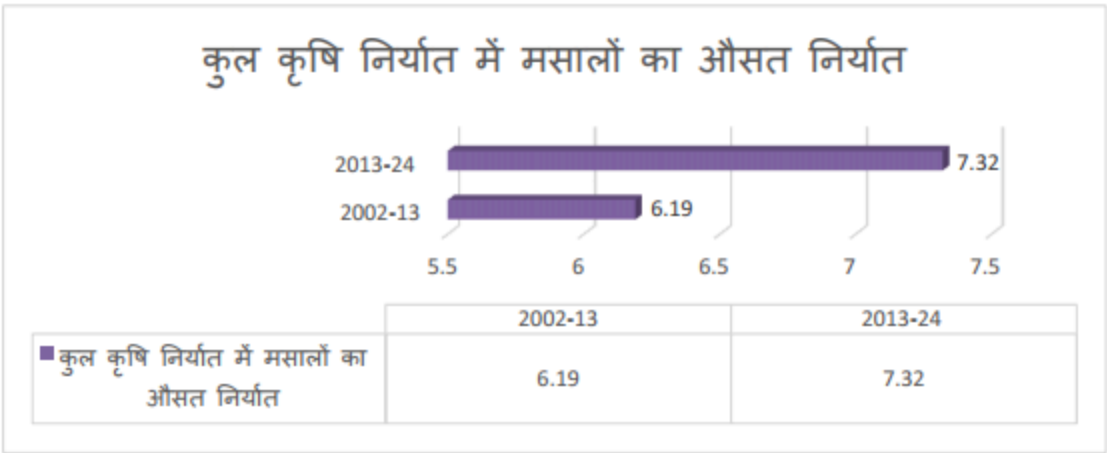

स्रोतः सारणी संख्या– 4 पर आधारित

सारणी संख्या–4 के आधार पर यदि मसालों के भारत के कुल कृषि निर्यात के प्रतिशत अंश के आधार पर अध्ययन करें, तो विश्लेषण की पहली समयावधि 2002–03 से 2012–13 में मसालों का निर्यात 6.19 प्रतिशत रहता है, जो अगले समयावधि 2013–14 से 2023–24 में बढ़कर 7.32 प्रतिशत हो जाता है। इस समयावधि 2002–03 से 2012–13 और 2013–14 से 2023–24 में मसालों के निर्यात में 1.13 प्रतिशत की वृद्धि देखी गई।

भारत के मसालों के निर्यात की दिशा का विश्लेषण– भारत के निर्यात की दिशा से तात्पर्य उन क्षेत्रो या देशों से है, जिनके द्वरा भारतीय निर्यात को अपने लिए आयात किया जाता है। भारत के मसालों का सबसे बड़ा आयताक देशों में प्रमुख अमेरिका, चीन और बांग्लादेश और संयुक्त अरब अमीरात हैं। इस अध्ययन में सरलता के लिए वैश्विक रूप से देशों को 4 महाद्वीपों के आधार पर विश्लेषित किया गया है, यथाः अमेरिका, अफ्रीका एशिया और यूरोप। भारत प्राचीन काल से ही मसाले का निर्यात करता रहा है। भारत के मसाला निर्यात में एशिया सबसे प्रमुख क्षेत्र के रूप में रहा है, जहाँ कुल मसाला निर्यात का 50% से ज्यादा भाग भेजा गया है, इनमे चीन, थाईलैंड, बांग्लादेश, संयुक्त अरब अमीरात और सऊदी अरब महत्वपूर्ण देश रहे हैं, जबकि अमेरिका में उत्तरी अमेरिका और कनाडा भारतीय मसालों के प्रमुख आयातक देश है, जबकि यूरोप में यूके, जर्मनी और नीदरलैंड प्रमुख मसाला आयातक देश हैं।

यदि भारतीय कृषि निर्यातों का विभिन्न महाद्वीपों के के आधार पर विश्लेषण करें, तो सारणी संख्या– 5 के अनुसार, सबसे अधिक योगदान एशिया का रहा है। वर्ष 20023 में एशिया का कुल निर्यात 138.3 US मिलियन डॉलर का था, जो 2008 में बढ़कर

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-I, Issues-35, YEAR-Jan-Mar. 2025

661.2 एक US मिलियन डॉलर और 2012–13 में 1561 US मिलियन डॉलर हो गया। एशिया को निर्यात में लगातार वृद्धि की प्रवृत्ति देखी गई। वर्ष 2019–20 में मसाले का कुल निर्यात 1921.6 US मिलियन डॉलर हो गया, यद्यपि कोरोना काल में मसाले के निर्यात पर असर पड़ा और 2022–23 में 1778.3 US मिलियन डॉलर हुआ, पुनः वर्ष 2023–24 में यह बढ़कर 2142.7 US मिलियन डॉलर हो गया।

सारणी संख्या–5

भारत के निर्यातों की दिशा का विश्लेषण

वर्ष	एशिया	अफ्रीका	अमेरिका	यूरोप
2002-03	138.3	11.6	98.1	87.5
2003-04	153.5	13.5	89.7	73.3
2004-05	199.1	15.8	107.6	89.3
2005-06	215.1	20.7	125.2	108.2
2006-07	355.7	23.3	166.8	139.4
2007-08	528.1	44.7	272.3	208.7
2008-09	661.1	80.5	361	257.7
2009-10	709	59.9	264.5	240.9
2010-11	955.7	89.1	356.2	339.3
2011-12	1,467.40	123.7	647.7	484.4
2012-13	1,561.00	134.4	612	481.5
2013-14	1,407.30	131	519.1	415.4
2014-15	1,341.70	126.9	526.5	398.7
2015-16	1,412.90	115.8	538.4	430.4
2016-17	1,661.30	121.1	570.2	450.9
2017-18	1,848.60	130.1	622.9	464.5
2018-19	2,048.70	152.7	653.7	415.3
2019-20	1,921.60	155.3	701.5	422.8
2020-21	1849.8	157.3	634.4	409.8
2021-22	1886.9	159.4	669.2	451.2
2022-23	1,778.30	142.1	684.1	423.4
2023-24	2,142.70	169.2	751.5	521.8

स्रोतः विभिन्न स्रोतों जैसे DGCI&S और कृषि निर्यात बोर्ड द्वारा प्राकलित

चित्र संख्या–5

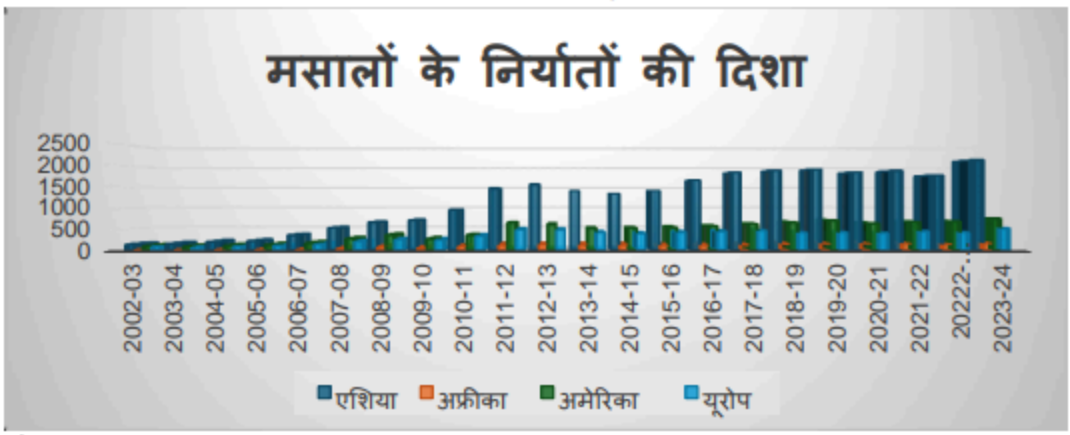

स्रोतः सारणी संख्या– 5

भारत द्वारा अफ्रीकी देशों को 2002–03 में मसाले का निर्यात 11.6 मिलियन डॉलर का था, जो 2008–09 में बढ़कर 80.5 US मिलियन डॉलर और 2012–13 में 134.4 US मिलियन डॉलर हो गया। वर्ष 2019–20 में यह 155.3 US मिलियन डॉलर था, जबकि 2023–24 में 169.2 US मिलियन डॉलर हो गया।

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-I, Issues-35, YEAR-Jan-Mar. 2025

अमेरिका को भारत द्वारा वर्ष 20023 में कुल 98.01 US मिलियन डॉलर का निर्यात किया गया, जो 2008–09 में बढ़कर 361 US मिलियन डॉलर था, जो 2012–13 में बढ़कर 612 US मिलियन डॉलर हो गया, जबकि 2019–20 में अमेरिका को मसाले का निर्यात 701 US मिलियन डॉलर का हो गया था। वर्ष 2023 24 में यह निर्यात 751.5 US मिलियन डॉलर हो गया। यूरोपीय देशों को 20023 में मसाले का निर्यात 87.5 मिलियन डॉलर था, जो 2008 में बढ़कर 257.7 मिलियन डॉलर हो गया। 2012–13 में यह निर्यात 481.5 मिलियन डॉलर था, जबकि 2023 24 में भारत द्वारा यूरोप को मसाले का निर्यात 521.8 मिलियन डॉलर का किया गया। इस प्रकार भारतीय मसाले के निर्यात के प्रमुख आयातक के रूप में एशिया अमेरिका यूरोप और इसके पश्चात अफ्रीकन देश का स्थान आता है।

निष्कर्ष– उपरोक्त विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि भारत के मसाला निर्यात का सबसे बड़ा हिस्सा एशिया महाद्वीप को जाता है, जहाँ भारतीय मसलों की मांग, विशेष रूप से प्रसंस्कृत और आर्गेनिक के रूप में बढ़ रही है। भारत 150 से अधिक देशों को मसालों का निर्यात कर रहा है, जिसमे लाल मिर्च, हल्दी, जीरा, कालीमिर्च, धनिया और मिंट प्रमुख हैं। एशिया के अतिरिक्त अमेरिका और यूरोप भारतीय मसालों के महत्वपूर्ण आयातक हैं। भारतीय निर्यात में वृद्धि के लिए देश में उपलब्ध विविध जलवायु और भिन्न प्रकार की मिट्टियों की उपलब्धता जिम्मेदार हैं। वैश्विक स्तर पर भारतीय व्यंजन के मांग से मसालों की मांग में वृद्धि आयी है। इसके अतिरिक्त सरकार द्वारा निर्यात प्रोत्साहन योजना तथा गुणवत्ता मानकों में सुधार और मसाला बोर्ड द्वारा गुणवत्ता नियंत्रण ने मसालों के निर्यात को बढाया है। समग्र रूप से भारत का मसाला निर्यात निरंतर प्रगति कर रहा है और वैश्विक बाज़ार में इसकी प्रतिस्पर्धात्मक स्थिति मजबूत है तथा आने वाले समय में मूल्य वर्धित और प्रसंस्कृत मसलों के निर्यात में अधिक संभावनाएँ हैं। मसाला निर्यात बोर्ड द्वारा 2030 तक मसालों के निर्यात का लक्ष्य दोगुना करने का है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. भारतीय मसाला बोर्ड (2024), भारतीय मसाले; निर्यात सांख्यिकी एवं वार्षिक प्रतिवेदन. कोच्चिः वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार।
2. APEDA (2024), कृषि एवं प्रसंस्कृत खाद्य उत्पादों का निर्यात आँकड़ा संग्रह. नई दिल्लीः कृषि एवं प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण।
3. DGCI&S, Kolkata, Ministry of Commerce, Government of India.
4. CMIE Outlok.com: 2023–24.
5. Ministry of Commerce and Industry. (2024); भारत का विदेश व्यापार सांख्यिकीय. नई दिल्लीः भारत सरकार।
6. एग्रीकल्चर स्टैटिस्टिक्स एट अ ग्लांस; 2023–24 नई दिल्लीः भारत सरकार।
7. FAO, (2024). FAOSTAT; मसाले एवं कंडिमेंट्स आँकड़ा. रोमः खाद्य एवं कृषि संगठन, संयुक्त राष्ट्र।
8. चंद, आर. (2017); किसानों की आय दोगुनी करने की रणनीति. नई दिल्लीः नीति आयोग, भारत सरकार।
9. World Trade Organization, (2022); विश्व व्यापार सांख्यिकी समीक्षा, जिनेवाः WTO प्रकाशन।

*****